नए साल का जश्न

[**हिन्दी** – Hindi – هندي]

हातिम हमज़ा

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1435

IslamHouse.com

﴿ حفل رأس السنة ﴾

« باللغة الهندية »

حاتم حمزة

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1435

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

नए साल का जश्न

घड़ी की सुई 31 दिसंबर की रात को बारह बजने में केवल पाँच मिनट कम होने का संकेत दे रही थी कि माँ तीव्र गति के साथ बिजली की बटन (स्विच) की ओर गई और उसे बंद कर दिया . . ताकि घर में घोर अंधेरा फैल जाए . . .

अचानक इस अंधेरे को पिता के हाथ में एक छोटे से मशाल ने रोशन कर दिया जिसके साथ वह मोमबत्ती की ओर रूख किया जो उस केक के बीच में थी जिसके चेहरे को क्रीम से सजाने में माँ ने घन्टों बिताया था और उसके ऊपर (Happy New Year) अर्थात नए साल की बधाई लिखना नहीं भूली थी।

मोमबत्ती की रोशनी ने थोड़ा अंधेरे को दूर करना शुरू किया जिससे युवा बच्चे अहमद का चेहरा दिखाई देने लगा जो केक के पास बैठा हुआ था।

माँ मोमबत्ती की ओर देख रही थी और अपनी जवानी और शादी के दिनों के बारे में सोच रही थी।

तथा बाप मोमबत्ती की ओर देख रहा था और वह उन परियोजनाओं के बारे में सोच रहा था जिन्हें उसने शुरू किया था।

रही बात अहमद की तो वह मोमबत्ती की ओर देख रहा था जो उनके लिए उस जगह उजाला करने के लिए जल रही थी और उसके दिमाग़ में बहुत से प्रश्न घूम रहे थे।

घड़ी की घंटी ने आधी रात के बाद बारह बजने की घोषणा करते हुए उनके सोच विचार को काट दिया।

माँ ने अहमद का एक हाथ पकड़ा और बाप ने उसके दूसरे हाथ को पकड़ा फिर सब के सब मोमबत्ती की ओर रूख किए। फिर उनका 'हूफ' कहना मोमबत्ती बुझाने के लिए काफी था। सभी लोग ताली बजाने लगे जिनमे अपने दोनों नन्हें हाथों के साथ अहमद भी शामिल था . . .

बाप लाइट की स्विच की ओर कूद कर गया और उसे दबा दिया ताकि प्रकाश उस सजावट को ज़ाहिर कर दे जिससे घर भरा हुआ था . . .

अहमद : माँ

माँ : हाँ प्यारे

अहमद : क्या हम कल चर्च जायेंगे??

माँ आश्चर्य से : क्यों ?!!

अहमद : हमारे साथ एक ईसाई छात्र है वह कह रहा थे कि वे लोग कल चर्च जायेंगे।

माँ : हम मुसलमान हैं हम मस्जिद जाते हैं।

अहमद एक पल के लिए चुप रहा फिर कहा : क्या कल वे मस्जिद में जश्न मायेंगे ??

माँ : नहीं

अहमद : क्यों ?

माँ इस प्रश्न का जवाब देने की बाबत असमंजस में पड़ गई। अतः उसने चुप रहने को प्राथमिकता दी।

लेकिन अहमद ने अपनी बात जारी रखते हुए कहाः

निश्चित रूप से अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस उत्सव का जश्न मनाया है।

बाप अपनी जगह पर फड़फड़ा उठा और कहा : नहीं, नहीं मनाया है।

अहमद ने अपने बाप की ओर आश्चर्य से देखा और कहा : मैं अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्यार करता हूँ और आप लोगों ने कहा है कि हमें उसी तरह करना चाहिए जिस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किया करते थे और उस चीज़ को छोड़ देना चाहिए जिसे आप ने नहीं किया है। फिर हम इस जश्न को क्यों मनाते हैं जबकि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने इसका जश्न नहीं मनाया है ?

मां और बाप की निगाहें एक दूसरे से मिलीं इस आशा में कि वे इस दुविधा से निकलने का कोई रास्ता पा सकें जिसे अहमद के प्रश्नों ने उनके सामन पैदा कर दिया है।

मां ने अहमद को चिमटा लिया और उससे कहा : हम खुशी और जश्न मनातें हैं और कल तुम्हें लेकर पार्क में जायेंगे। अतः इन सारे प्रश्नों की कोई ज़रूरत नहीं है।

अहमद अपनी मां को खुश करने के लिए चुप हो गया, जबकि वे प्रश्न उसके नन्हें सिर में घूम रहे थे।

बाप खड़ा हुआ और टेलीवीज़न चला दिया इस

उम्मीद में कि वह कोई प्रोग्राम ढूंढे जिसकी वजह से अहमद अपने प्रश्नों को भूल जाए।

लेकिन . . .

हवाएं, जहाज़ों की इच्छा के विपरीत दिशा में चल रही थीं . . .

ज्यों ही टीवी पर छवि प्रकट हुई एक शैख (धर्मज्ञानी) की आवाज़ सुनाई पड़ी जो एक सैटेलाइट चैनल पर बात कर रहे थे :

मुस्लिम दुनिया में दिखाई देने वाली पश्चिमवाद (पश्चिमी देशों की संस्कृति) के दृश्यों में से क्रिसमस और नए साल के त्योहारों का जश्न मनाना है, जबकि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए इस्लाम धर्म में केवल दो

त्योहारों का जश्न मनाना धर्म संगत ठहराया है : ईदुल अज़हा और ईदुल फित्र। इसका प्रमाण वह हदीस है जिसे अबू दाऊद ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तश्रीफ लाए और उनके लिए दो दिन थे जिसमें वे खेलकूद करते थे। तो आप ने पूछा : ये दोनो दिन क्या हैं? उन्हों ने कहा : हम जाहिलियत (अज्ञानता) के काल में इनमें खेला करते थे। इस पर आप ने फरमाया : ''अल्लाह ने तुम्हें इन दोनों से बेहतर दिन बदले में दिए हैं : ईदुल–अज़हा का दिन और ईदुल–फित्र का दिन।''

हदीस से तर्क इस प्रकार स्थापित किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें जाहिलियत के समय काल के दोनों ईद के दिनों

पर बरक़रार नहीं रखा बल्कि उन दोनों को त्यागकर उनके बदले में दो शरई ईद के दिन निर्धारित कर दिए। तथा जुमा का दिन इसके अतिरिक्त है।

दूसरा प्रमाण वह हदीस है जिसे अबू दाऊद ने साबित बिन ज़ह्हाक़ से रिवायत किया है कि उन्हों ने फरमाया : एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय काल में ''बुवाना'' नामी स्थान पर ऊंट बलिदान करने की मन्नत मानी थी। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा : ''मैं ने यह मन्नत मानी थी कि ''बुवाना'' नामी जगह पर एक ऊंट बलिदान करूंगा। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा : ''क्या उस स्थान पर जाहिलियत की मूर्तियों में से किसी मूर्ति की पूजा की जाती थी ?''

लोगों ने कहा : नहीं। आप ने पूछा : ''क्या वहाँ पर उनके त्योहारों में से कोई त्योहार होता था ?'' लोगों ने कहा : नहीं। हदीस के वक्ता कहते हैं : तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अपनी मन्नत पूरी करो। क्योंकि अल्लाह की अवज्ञा में तथा उस चीज़ के अंदर जिसका आदमी मालिक नहीं, कोई मन्नत मान्य नहीं है।''

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी जगह पर मन्नत पूरी करना हराम (वर्जित) ठहरा दिया जहाँ जाहिलियत के समय काल का त्योहार या उत्सव मनाया जाता रहा हो, और आप ने इसे अवज्ञा की संज्ञा दी है। तो फिर उस व्यक्ति का क्या हुक्म होगा जो नास्तिकों (अविश्वासियों) के त्योहारों में उपस्थित हो।

अतः हमारे लिए ईसाइयों के त्योहारों को मनाना जायज़ नहीं है, क्योंकि त्योहार का संबंध आस्थाओं से होता है, और प्रत्येक धर्म वालों का एक त्योहार होता है जिसका वे जश्न मनाते हैं।

विद्वानों ने प्राचीन और वर्तमान समय में ईसाइयों के त्योंहारों में भाग लेने के हुक्म के बारे में बात किया है, इस विषय में शैख उसैमीन रहिमहुल्लाह का एक फत्वा आपके सामने प्रस्तुत है . . .

अहमद, शैख के एक–एक शब्द को ध्यान से सुन रहा था . . .

शैख ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा :

आदरणीय शैख मुहम्मद बिन सालेह उसैमीन

रहिमहुल्लाह से पूछा गया :

प्रश्न : अविश्वासियों को क्रिसमस के त्योहार की बधाई देने का क्या हुक्म है; क्योंकि वे लोग हमारे साथ काम करते हैं ? और यदि वे हमें इसकी बधाई दें तो हम उसका कैसे जवाब दें ? क्या उत्सवों के उन स्थानों पर जाना जायज़ है जो वे इस अवसर पर आयोजित करते हैं ? और क्या आदमी अगर उक्त चीज़ों में से कोई बिना इच्छा के कर ले, चाहे उसने उसे शिष्टाचार के तौर पर किया हो या शर्म की वजह से या परेशनी (शर्मिन्दगी) में या किसी अन्य कारण से किया हो, तो क्या वह गुनाहगार होगा ? और क्या उसके लिए इसके अंदर उनकी नकल करना और उनकी छवि अपनाना जायज़ है ?

हमें इस बाबत शरीअत के प्रावधान से अवगत कराकर पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर :

कुफ्फार (अविश्वासियों) को क्रिसमस दिवस या उनके अन्य धार्मिक त्योहारों की बधाई देना सर्वसम्मति से हराम है, जैसाकि इब्नुल क़ैयिम – रहिमहुल्लाह – ने अपनी पुस्तक (अहकामो अह्लिज़्ज़िम्मा) में उल्लेख करते हुये फरमाया है : ''कुफ्र के विशिष्ट प्रावधानों (प्रतीकों) की बधाई देना सर्वसम्मति से हराम (निषिद्ध) है, उदाहरण के तौर पर उन्हें उनके त्योहारों और व्रत की बधाई देते हुये कहना : आप को त्योहार की बधाई हो, या आप इस त्योहार से खुश हों इत्यादि, तो ऐसा कहने वाला यदि कुफ्र से सुरक्षित रहा, तो यह हराम

चीज़ों में से तो है ही, और यह उसे सलीब को सज्दा करने की बधाई देने के समान है, बल्कि यह अल्लाह के निकट शराब पीने, हत्या करने, और व्यभिचार इत्यादि करने की बधाई देने से भी बढ़ कर पाप और अल्लाह की नाराज़ी (क्रोध) का कारण है। बहुत से ऐसे लोग जिनके निकट दीन का कोई महत्व और स्थान नहीं, वे इस त्रुटि में पड़ जाते हैं, और उन्हें अपने इस घिनावने काम का कोई बोध नहीं होता है। अतः जिस आदमी ने किसी बन्दे को अवज्ञा (पाप) या बिद्अत, या कुफ्र की बधाई दी, तो उस ने अल्लाह तआला के क्रोध, उसके आक्रोश और गुस्से को न्योता दिया।'' (इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह की बात समाप्त हुई)

काफिरों को उनके धार्मिक त्योहारों की बधाई देना हराम और इब्नुल क़ैयिम के द्वारा वर्णित स्तर तक

गंभीर इस लिये है कि इस में यह संकेत पाया जाता है कि काफिर लोग कुफ्र की जिन रस्मों पर क़ायम हैं उन्हें वह स्वीकार करता है और उनके लिए उसे पसंद करता है, भले ही वह अपने आप के लिये उस कुफ्र को पसंद न करता हो। किन्तु मुसलमान के लिए हराम है कि वह कुफ्र की रस्मों और प्रावधानों (प्रतीकों) को पसंद करे या दूसरे को उनकी बधाई दे, क्योंकि अल्लाह तआला इस चीज़ को पसंद नहीं करता है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ إن تكفروا فإن الله غنى عنكم ولا يرضى لعباده الكفر وإن تشكروا يرضه لكم ﴾ [سورة الزمر:7]

''यदि तुम कुफ्र करो तो अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह अपने बन्दों के लिए कुफ्र को पसंद

नहीं करता और यदि तुम शुक्र करो तो तुम्हारे लिये उसे पसंद करता है।'' (सूरतुज़्ज़ुमर : 7)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي

ورضيت لكم الإسلام ديناً﴾ [سورة المائدة:3]

''आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें सम्पूर्ण कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया।'' (सूरतुल–मायदा : 3)

और उन्हें इसकी बधाई देना हराम है चाहे वे उस आदमी के काम के अंदर सहयोगी हों या न हों।

और जब वे हमें अपने त्योहारों की बधाई दें तो हम उन्हें इस पर जवाब नहीं देंगे, क्योंकि ये हमारे

त्योहार नहीं हैं। तथा इस लिए भी कि ये ऐसे त्योहार हैं जिन्हें अल्लाह तआला पसंद नहीं करता है, क्योंकि या तो ये उनके धर्म में स्वयं गढ़ लिये गये (अविष्कार कर लिये गये) हैं, और या तो ये वैध थे लेकिन इस्लाम धर्म के द्वारा निरस्त कर दिये गये जिस के साथ अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सर्व सृष्टि की ओर भेजा है, और उस के बारे में फरमाया है :

﴿ ومن يبتغ غير الإسلام ديناً فلن يقبل منه وهو فى الآخرة من الخاسرين ﴾ [سورة آل عمران85]

''जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म ढूँढ़े तो उसका धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा, और वह परलोक में घाटा उठाने वालों में

से होगा।'' (सूरत आल–इम्रानः 85)

मुसलमान के लिए इस अवसर पर उन के निमंत्रण को स्वीकार करना हराम है, इसलिए कि यह उन्हें इसकी बधाई देने से भी अधिक गंभीर है, क्योंकि इसके अंदर उस काम में उनका साथ देना पाया जाता है।

इसी प्रकार मुसलमानों पर इस अवसर पर समारोहों का आयोजन करके, या उपहारों का आदान प्रदान करके, या मिठाईयाँ अथवा खाने की डिश वितरण करके, या काम की छुट्टी करके और ऐसे ही अन्य चीज़ों के द्वारा काफिरों की छवि (समानता) अपनाना हराम है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

''जिस ने किसी क़ौम की छवि अपनाई वह उसी में

से है।''

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या अपनी किताब (इक़्तिज़ाउस्सिरातिल मुस्तक़ीम मुख़ालफतो असहाबिल जहीम) में फरमाते हैं : ''उनके कुछ त्योहारों में उनकी नक़ल करना इस बात का कारण है कि वे जिस झूठ पर क़ायम हैं उस पर उनके दिल खुशी का आभास करेंगे, और ऐसा भी सम्भव है कि यह उन के अंदर अवसरों से लाभ उठाने और कमज़ोरों को अपमानित करने की आशा पैदा कर दे।'' (इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह की बात समाप्त हुई)।

जिस आदमी ने भी इन में से कुछ भी कर लिया तो वह पापी (दोषी) है चाहे उसने सुशीलता (शिष्टाचार) के तौर पर ऐसा किया हो, या मित्रता के तौर पर, या शर्म की वजह से या इनके अलावा

किसी अन्य कारण से किया हो, क्योंकि यह अल्लाह के धर्म में पाखण्ड है, तथा काफिरों के दिलों को मज़बूत करने और उनके अपने धर्म पर गर्व करने का कारण है।

और अल्लाह ही से प्रार्थना है कि वह मुसलमानों को उन के धर्म के द्वारा इज़्ज़त (सम्मान) प्रदान करे, उन्हें उस पर सुदृढ़ रखे, और उन्हें उन के दुश्मनों पर विजयी बनाये। निःसन्देह वह शक्तिशाली और सर्व–शक्तिसम्मान है। तथा सभी प्रशंसायें सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए हैं। अल्लाह तआला हमारे ईश्दूत मुइम्मद, उनकी संतान और उनके साथियों पर दया व शांति अवतरित करे।

प्रसारक : आदरणीय शैख ! अल्लाह आपको अच्छा

बदला प्रदान करे।

अहमद के गाल पर आँसू की एक बूँद टपक पड़ी जिसे माँ ने जल्दी से पोंछ दिया जबकि वह उसके दोनों कंधों का थपथपा रही थी . .

अहमद : माँ क्या मेरे ऊपर कोई पाप है ?

माँ ने अपने आँसुओं को रोकने की भरपूर कोशिश करते हुए – लेकिन वह उसमें असक्षम रही और उससे दो बूँद आँसू निकल ही गए – कहा : नहीं, तेरे ऊपर कोई पाप नहीं है। अभी तू छोटा है।

बाप ने स्नेही आवाज़ में कहा : अहमद! गलती तो हमसे हुई है, लेकिन हम तुझसे वायदा करते हैं कि आज के बेद केवल ईदुल अज़हा और ईदुल फित्र

की जश्न मनायेंगे।

अहमद बचपन की मासूमियत के साथ : माँ क्या आप हमारे लिए केक और सजावट तैयार करेंगी और हम ईदुल अज़हा में पार्क जायेंगे !!